International Journal of Education and Science Research Review
Volume-11, Issue-3 May-June-2024 E-ISSN 2348-6457
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Impact Factor - 7.02 Email- editor@ijesrr.org

वाल्मीकि रामायण में नारी सामाजिक स्थिति का तथ्यात्मक अध्ययन

डॉ० सुमन शर्मा
सहायक आचार्य (इतिहास)
श्री अग्रसेन महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भरतपुर (राजस्थान)

दोनों ही महाकाव्य रामायण एवं महाभारत संस्कृत की प्राचीन रचनाऐं है। रामायण भारतीय संस्कृति का आदिकाव्य कहा जाता है। इन ग्रन्थों का भारतीय जीवन में बड़ा महत्त्व है। रामायण में मनुष्य जीवन के प्रत्येक पक्ष को अंकित किया गया है।

वाल्मीकि रामायण से भारतीय संस्कृति, समाज, राजनीति और धर्म आदि की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त तत्कालीन पारिवारिक जीवन के विभिन्न स्वरूपों कन्या, पत्नी, विवाह–पद्धति, बहुपत्नीत्व और एक पत्नीव्रत आदि का चित्रण प्राप्त होता है। रामायणकाल में चारों आश्रमों में से गृहस्थ आश्रम को सर्वश्रेष्ठ आश्रम माना है।[1] इसी आश्रम में व्यक्ति अपने सभी उत्तरदायित्वों को निभाता है तथा समाज कल्याण के कार्य भी करता है।

रामायणकाल में संयुक्त परिवार प्रणाली प्रचलित थी। परिवार मुखिया पिता तथा पत्नी घर की संचालिका होती थी। ज्येष्ठ पुत्र पिता का उत्तराधिकारी होता था।[2] पुरूष अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए अपनी पत्नी के सहयोग से यज्ञादि धर्म अनुष्ठान करते थे। पत्नी का परिवार में सम्मानित स्थान होने पर भी वह अपने पति के अधीन होती थी।[3] परिवार में माता–पिता को एक समान दर्जा प्राप्त था, इस समानता के आधार पर माता कौशल्या ने पुत्र राम से कहा था कि जैसे ''गौरव के कारण राजा तुम्हारे पूज्य है, उसी प्रकार मैं भी हूँ। मैं तुम्हें वन जाने की आज्ञा नहीं देती, अतः तुम्हें यहाँ से वन को नहीं जाना चाहिये।[4] गृहस्वामिनी होने के नाते पत्नी का परम कर्त्तव्य व धर्म परिवार की परम्पराओं एवं मान्यताओं की रक्षा करना था। अपने धर्म का पालन न करने के कारण कैकेयी को दुराचारिणी, दयाहीन, कुलविनाशिनी जैसे शब्दों का पात्र बनना पड़ा।[5]

रामायणकाल में कन्या के लिए उपेक्षा के प्रमाण नहीं मिलते है। राजा जनक व उनकी पत्नी ने सीता का स्नेहमयी व मातृ समुचित सौहार्द से लालन–पालन किया।[6] इस काल में कन्याओं को सौभाग्य

का प्रतीक माना जाता था। धार्मिक कार्यों, सार्वजनिक समारोह, अभिषेकों इत्यादि मांगलिक कार्यों में कन्या की उपस्थिति शुभ मानी जाती थी यथा राम के वन से लौटने पर गौ, ब्राह्मण के साथ–साथ कन्याऐं भी उनके आगे–आगे चल रही थी।[7] राज्याभिषेक के समय सोलह कन्याओं में उन पर औषधि रस एवं जल का अभिषेक किया।[8]

फिर भी कपितय स्थानों पर कन्या के पिता के दुःखी होने का उल्लेख मिलता है। क्योंकि पिता को यह चिन्ता थी कि कौन पुरूष उनकी कन्या का वरण करेगा।[9] सीता स्वयं देवी अनुसूया से कहती है कि मेरे पिता योग्य वर न खोज पाने से चिन्तित थे, उन्होंने स्वयंवर कराने का निर्णय लिया।[10]

स्त्रियाँ अकेले भी अनेक धार्मिक कृत्य सम्पन्न करती थीं। वाल्मीकि रामायण में कौशल्या को हवन करते हुए[11] तथा सीता को सन्ध्योपासना[12] करते हुए वर्णित किया है। बाली की पत्नी तारा भी मन्त्र ज्ञाता थी।[13] बालिकाओं को संगीत, नृत्य, चित्र, युद्ध कौशल आदि कलाओं एवं अन्य उपयोगी विषयों की शिक्षा दी जाती थी, इसका प्रमाण वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड के दशम् सर्ग में वर्णित है जिसमें रावण के अन्तःपुर की स्त्रियाँ भिन्न–भिन्न प्रकार के वाद्य, संगीत व नृत्य में अत्यन्त कुशलता का चित्रण किया गया है।

कन्या का विवाह यौवनावस्था में होता था। स्वयंवर प्रथा प्रचलित थी लेकिन कन्याएँ स्वच्छन्द नहीं थी। स्वयंवर कन्या की स्वेच्छा से नहीं बल्कि पिता की इच्छा से होता था क्योंकि कन्या पिता के अधीन रहती थी।[14] पिता की आज्ञा के बिना न तो पुरूष कन्या का वरण करता, न ही कन्या किसी पुरूष को वर के रूप में वरण करती थी।[15] रामायणकाल में सामान्यतया बहुपत्नी प्रथा प्रचलन में थी। राजा दशरथ के तीन रानियाँ कौशल्या, कैकेयी व सुमित्रा थी। वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड अध्याय के चौदह सर्ग में रावण के अन्तःपुर का वर्णन है। जिसमें रावण की अनेक पत्नियों का उल्लेख है साथ ही वाल्मीकि ने रावण के अन्तःपुर को व्यंग्यात्मक रूप में 'स्त्रीवनम्' कहा। आदर्श पत्नी वही मानी जाती थी। जिसमें दासी, सखी, पत्नी, भगिनी तथा माता के समस्त गुण विद्यमान हो।[16] पत्नी के बिना पुरूष धर्म, अर्थ व काम आदि को सिद्ध नहीं कर सकता था।[17]

रामायणकाल में पति की सेवा ही स्त्री के लिए सनातन धर्म है।[18] स्त्री के जीते–जी उसका पति ही उसके लिए देवता और ईश्वर के समान है।[19] उत्कृष्ट गुणवाली एवं व्रत उपासना करने वाली नारी भी यदि पति सेवा नहीं करती हैं, उसे नरक गति प्राप्त होती है।[20] इसके विपरित देवताओं की पूजा वन्दना से दूर रहने वाली, लेकिन पति की सेवा मात्र से वह नारी स्वर्गलोक को प्राप्त करती है।[21] पति ही पत्नी को

आश्रव व गति देता है।[22] पति सेवा से इहलोक व परलोक दोनों में कल्याण होता है।[23] स्त्रियों के लिए एकमात्र पति ही परम पवित्र एवं सर्वश्रेष्ठ देवता है।[24] पत्नियों को पति का अर्धांग माना जाता था।[25] रामायण में एक स्थान पर सुमन्त्र रानी कैकेयी को समझाते हुए कहते है कि नारियों के लिये पति की इच्छा का महत्त्व करोड़ों पुत्रों से भी अधिक है।[26] जैसे बिना तार की वीणा नहीं बज सकती और बिना पहिये का रथ नहीं चल सकता है, उसी प्रकार नारी सौ पुत्र की माता होने पर भी बिना पति के सुखी नहीं हो सकती।[27] जो स्त्रियाँ अपने पति का आदर व सम्मान नहीं करती तथा संकट के समय में पति का सत्कार नहीं करती उन्हें रामायण में 'असती' (दुष्टा) कहा गया है।[28] पति गुणवान हो या गुणहीन, धर्म का विचार करने वाली स्त्रियों के लिये वह प्रत्यक्ष देवता है।[29] इस समय अन्तर्जातीय विवाह प्रचलित थे। ब्राह्मण ऋष्यश्रृङ्ग का विवाह क्षत्रिय राजकुमारी शान्ता[30] तथा श्रवणकुमार की माता शूद्र तथा पिता वैश्य[31] का विवाह अन्तर्जातीय (अनुलोम) विवाह के उदाहरण है।

रामायणकाल में विवाह विच्छेद को मान्यता नहीं थी। विपरित परिस्थिति में पत्नी का त्यागकर दिया जाता था उदाहरणार्थ राजा दशरथ द्वारा कैकेयी को उसके स्वार्थ के कारण,[32] ऋषि गौतम द्वारा अहिल्या को व्यभिचार के दोष के कारण[33] तथा श्रीराम द्वारा सीता को लोकापवाद[34] के भय के कारण त्याग दिया गया।

रामायणकाल में पिता स्नेहवश पुत्री को यथेष्ट उपहार देता था। राजा जनक ने अपनी कन्याओं के विवाह में उपहार स्वरूप बहुत अधिक धन दिया, मिथिला नरेश ने लाखों गायें, रेशमी व सूतीवस्त्र, गहने, हाथी, घोड़े, रथ, पैदल सैनिक इत्यादि स्वेच्छा से भेंट किये।[35] कन्या को कन्यादान में प्राप्त उपहार व पिता से प्राप्त धन ही कन्याधन कहलाया। आधुनिक विद्वान् इन उपहारों को दहेज रूप मानते है जो सत्य प्रतीत नहीं होता पिता पुत्री को स्नेहवश उपहार देता था।

इस काल में नारी को अपने पति के दाह संस्कार में जाने का अधिकार था।[36] यद्यपि इस समय नारी, वैधव्य को सबसे बड़ा भय और महान् संकट समझती थी।[37] लेकिन प्रत्यक्ष में ऐसा नहीं था। विधवाऐं सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत करती थी। यद्यपि मांगलिक कार्यों में विधवाओं की उपस्थिति को अशुभ माना जाता था किन्तु राम के राज्याभिषेक के समय आरती, सीता का शृंगार तथा अन्य मंगल कार्य तीनों विधवा माताओं द्वारा ही किए गए।[38] बाद में मधुपुरी के राजा शत्रुघ्न का मंगल अभिषेक भी तीनों विधवा रानियों

द्वारा किया गया था।[39] राजा दशरथ की विधवा रानियाँ अनेक प्रकार के धर्म अनुष्ठान तथा दान–पुण्य करती थी,[40] अपने पति की सम्पत्ति की स्वामिनी थी।

राक्षस तथा वानर कुलों में विधवा पुनर्विवाह का प्रचलन था। विधवा मन्दोदरी द्वारा विभीषण का तथा तारा द्वारा सुग्रीव का वरण करने का उल्लेख मिलता है। वानर कुल समाज में विधवा का उसके मृत पति की सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं होता था।[41] इस युग में नियोग तथा पर्दाप्रथा का कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होता है।

रामायणकाल में गणिकाओं का अलग–अलग स्थानों पर उल्लेख मिलता है। समारोह,[42] राज्याभिषकों[43] और स्वागत कार्यों[44] में ही नहीं सेना के मनोरंजन[45] के लिए भी गणिकाएँ साधन होती थी। गणिकाओं को अयोध्या में रूपाजीवा[46] तथा वर–शोभिता[47] जैसा सुगण्य स्थान प्राप्त था। नारी की चोरी व अपहरण का अत्यन्त जघन्य अपराध माना जाता था।[48] सीता का अपहरण करने पर विभीषण ने रावण से कहा था कि यह कार्य धर्म–नाशक है।[49] रावण की पत्नी मन्दोदरी ने कहा था कि पतिव्रता के आँसू व्यर्थ नहीं जाते, सीता के अपहरण करने से रावण कुल नष्ट हुआ है।[50] इस काल में पुत्री, पुत्र–वधू, भ्रातृ–वधू एवं गुरू–पत्नी आदि पर कुदृष्टि रखना जघन्य पाप माना जाता था। परस्त्री को विषाक्त भोजन के समान माना जाता था।[51]

इस काल में पुत्रवती व सदाचारिणी स्त्री को समाज में सम्मान प्राप्त था। सन्तान उत्पत्ति न होना नारी जीवन के लिए दुर्भाग्य एवं अभिशाप माना जाता था। समाज में नारी के समर्पण, पतिव्रत, धर्मसेवा और त्याग के साथ ही दुराग्रह, हठ, ईर्ष्या, कठोरता, कटुवाणी, अविवेकपूर्ण, अस्थिरता एवं उत्सुकता आदि स्त्री स्वभाव के दोषों का वर्णन वाल्मीकि रामायण में प्राप्त होता है।

सन्दर्भ–

1 चतुर्णामाश्रमाणां हि गार्हस्थ्सयं श्रेष्ठमुन्तमम्।, वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड, /106/22
2 ज्येष्ठस्य राजता नित्यमुचिता हिकुलस्य नः। नैवं भवन्तो मां वक्तुम र्हन्ति कुशलाजनाः।।, वही/79/7
3 उपावृत्योत्थितां दीनां वऽवामिव वहिताम्। पांसुगुण्ठितसर्वाङ्गीं विमर्श च पाणिना।।,वही/20/34
4 यथैव राजा पूज्यते गौरवेण तथा ह्महम्।त्वां साहं नानुजानामि न गन्तव्यमितो वनम्।।, वही, 21/25
5 नृशंसे दुष्टचरित्रे कुलस्यास्य विनाशिनी।, वही,/12/7
6 तया सम्भाविता चास्मि स्निग्धया मातृसोह्रदात्।,वाल्मिकि रामायण, अयोध्याकाण्ड, /118/33
7 अक्षतं जातरूपं च गावः कन्या सहद्विजा। नरा मादकहस्ताश्च रामस्य पुरतोः ययुः।।,

वही, लंकाकाण्ड / 128 / 38

[8] ऋत्विग्भिब्राहह्मणैः पूर्व कन्याभिर्भन्त्रिभिस्तथा। यायधैश्रचैवाम्भविषञ्चस्ते सम्प्रष्टैः सनैगमैः।।, वही / 128 / 62

[9] कन्यापितृत्वं दुःखं हिसर्वेषां मानकाडिणाम् ।न ज्ञायते च कः कन्यां वरमेदिततिकन्यके।, वही, उत्तराकाण्ड / 9 / 9

[10] तस्य बुद्धिरियं जाता चिन्तयानस्य संततम्। स्वयंवरं तनुजायाः करिष्यामीति धर्मतः।।, वही, अयोध्याकाण्ड / 118 / 38

[11] सा क्षौमवसता दृष्टा नित्यं वृतपरायणा। अग्निं जुहोति स्मतदा मन्त्रवत्कृतमंग्ङला।।, वही, / 20 / 15

[12] संध्याकालमनाः श्यामा ध्रुवमेष्यति जानकी। नदीं चेमां शुभजलां संध्यायर्थे वखार्णिनी। वही, सुन्दरकाण्ड / 14 / 49

[13] ततः स्वस्त्ययन। कृत्वाम मन्त्रविद् विजयैषिणी।।, वाल्मिकि रामायण, किष्किन्धाकाण्ड / 16 / 12

[14] मामां स्पृश बलाद् राजन् कन्या पितृवशा अहम्।।, वही, सुन्दरकाण्ड / 80 / 9

[15] दीयमानां न तु वदा प्रतिजग्राह राघवः। अविज्ञाय पितुरघन्दमयोध्याधिपतेः।।, वही, अयोध्याकाण्ड / 12 / 68

[16] (अ) यदा यदा च कौसल्या दासीव च सखीवच ।भार्यावद् भगिनीश्च मातृवाच्चो पठिष्यति। (ब)सततं प्रियकामा में प्रियपुत्रा प्रियंवदा। न मया सत्कृता देवी सत्कारार्हा कृते तव।।, वही / 12 / 68–69

[17] धर्मार्थकामाः खलु जीवलोके, समीक्षिता धर्मफलोदयेषु। ये तत्र सर्वेस्युरसंशयं मे भार्गेव कश्मायिमता सपुत्रा।।, वाल्मिकि रामायण, अयोध्याकाण्ड / 21 / 57

[18] शुश्रूषा क्रियतां तावत् स हि धर्मः सनातनः।।, वही, / 24 / 13

[19] जीवन्त्या हि स्त्रिया भर्ता दैवतं प्रमुखे च।, वही, / 24 / 21

[20] व्रतोपवासनिरता या नारी परमोत्तमा। भतारं नानुर्वेत सा च पापगतिर्भवेत्।।, वही / 24 / 25

[21] भर्तुः शुश्रूषा नारी लभते स्वर्गमुत्तमम्। अपि या निर्णमस्कारा निवृत्ता देवपूजनात्।।, वही, / 24 / 26

[22] इह प्रेत्य च नारीणां पतिरेको गतिः सदा।, वही, / 27 / 6

[23] अमितस्य तु दातारं भर्तारं का न पूजयेत्।।, वही, / 39 / 30

[24] स्त्रीणां पवित्रं परमं अतिरेको विशिष्यते।।, वही, / 39 / 24

[25] आत्मा हि दाराः सर्वेषां दारसंग्रहवर्तिनाम्।।, वही, / 37 / 24

[26] भर्तुरिच्छा हि नारीणां पुत्रकोट्या विशिष्यते।।, वही, / 35 / 8

[27] नातन्त्री वाद्यते वीणा नाचक्रो विद्यते रथः ।नापतिः सुखमेधेन या स्यादपि शतात्मजा।।, वही, / 39 / 29

[28] असत्यः सर्वलोकेऽस्मिन् सततं सत्कृता प्रियैः ।भर्तारं नानुमन्यन्ते विनिपातगतं स्त्रियः।।, वाल्मिकि रामायण, अयोध्याकाण्ड, / 39 / 20

[29] भर्ता तु खलु नारीणां गुणवान् निर्गुणोऽपि वा। धर्मं विमृशमानानां प्रत्यक्ष देवि दैवतम्। वही / 62 / 8

[30] अन्तःपुरं प्रवेश्यास्मै कन्यां दत्तवा यथाविधि ।शान्तां शान्तेन मनसा राजा हर्षमवाप सः। वही, बालकाण्ड / 10 / 32

[31] शुद्रायामास्मि वैश्येन जातो नखराधिप।, वही, अयोध्याकाण्ड / 63 / 51

[32] केवलार्थपरां हि त्वां व्यक्तधर्मां व्यजाम्यहम।।, वही, अयोध्याकाण्ड /42/7
[33] ऐषीकं चापि चिक्षेप कपितो गाधिनन्दनः।।, वही, बालकाण्ड /56/6
[34] अप्यहं जीवितं जह्यां युष्मान् वा पुरूषर्षामाः।अपवादभयाद् भीतः किं पुनर्जनकात्मजाम्, वही, उत्तरकाण्ड /45/14
[35] (अ) अथ राजा विदेहानां ददौ कन्याधनं वहु।गवां शवसहस्राणि बहूनि मिथिलेश्वरः। (ब) कम्बलानां च मुख्यानां क्षौमान् कोट्यम्बरराणि च। इस्त्र्यश्वरथपादातं दिव्यरूपं स्वलंकृतम्।।, वाल्मिकि रामायण, बालकाण्ड/74/3–4
[36] प्रसव्यं चापि तं चक्रुर्ऋत्विजोऽग्निचितं नृपम्। स्त्रिश्च शोकसंतप्ताः कौसल्याप्रमुखा– स्तदा।।, वही, अयोध्याकाण्ड, /76/20
[37] नदीदृशं मयं किंचित् कुलस्त्रीणामिहोच्चते। भयानामपि सर्वेषां वैधत्यं व्यसनं महत्।।, वही, उत्तरकाण्ड /25/42,
[38] प्रतिकर्म च सीतायाः सर्वादशरथास्त्रियः। आत्मनैव तदा चक्रुर्मनास्विन्यो मनोहरम्।।, वही/128/17
[39] कौसल्या च सुमित्रा च मंगल कैकयी तथा।चक्रुस्ता राजभवने याष्चान्या राजभोषितः। वही, उत्तरकाण्ड/63/16
[40] कौसल्या च सुमित्रा च मंगल कैकयी तथा।चक्रुस्ता राजभवने याष्चान्या राजभोषितः। वही, उत्तरकाण्ड/63/16
[41] न चाहं हरिशज्यस्य प्रभवामभड़ गदस्य वा। पितृव्यस्तस्य सुग्रीवः सर्वकार्येष्वनन्तर।। वाल्मिकि रामायण, किष्किन्धाकाण्ड. /21/14
[42] वेश्याश्चालंकृताः स्त्रियः।।, वही, अयोध्याकाण्ड /14/39
[43] सर्वे च तालापचरा गणिकाश्च स्वंलकृताः।।, वही, /3/17
[44] सर्वे वादित्रकुशला गाणिकाश्चैव सर्वशः।।, वही, लंकाकाण्ड, /127/3
[45] रूपाजीवाश्च वादिन्यो वणिजश्च महाधनाः।शोभयन्तु कुमारस्य वाहिनीः सुप्रसारिताः।, वही, अयोध्याकाण्ड /36/3
[46] वही
[47] गणिकावरशोभितम्।।, वही, /51/21
[48] गतिरेका पतिर्नार्या द्वितीया गतिरात्मजः। तृतीया ज्ञातयो राजंश्चतुर्थी नैव विद्यते।।, वही, अयोध्याकाण्ड /61/24
[49] व्यजाशु कोपं सुख धर्मनाशनं मजस्व धर्मं रतिकीर्तिवर्धनम। प्रसीद जीवेम सुपुत्र बान्धवाः प्रदीयतां दाशरथाम मैथिली।।, वही, लंकाकाण्ड /9/22
[50] पतिव्रतानां नाकस्मात् पतच्यश्रूणि भूतले।, वही, /111/66
[51] तव भार्या महाबो भक्ष्यं विषकृतं यथा।।, वही, किन्किन्धाकाण्ड /6/8